Degree-1st. Paper-II

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएँ (Characteristics of Village Community)

भारतीय ग्रामीण समुदाय में आज जो विद्यमान हैं, उन्हें निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है :—

(1) छोटा आकार—

वास्तव में जब कभी भी एक गाँव की जनसंख्या में वृद्धि होती है, तो वह अवसर को छोटे-छोटे गाँवों में विभाजित हो जाती है। ग्रामीण समुदाय में न तो आर्थिक विकास के अधिक अवसर उपलब्ध हैं और न ही गाँव के मुखिया के द्वारा अधिक जनसंख्या पर नियन्त्रण रखा जा सकता है। इसके फलस्वरूप भी ग्रामीण समुदाय का आकार भी छोटा ही बना रहता है।

(2) कृषि ही मुख्य व्यवसाय—

हमारे ग्रामीण समुदाय की एक प्रमुख विशेषता इसकी अधिकांश जनसंख्या

Classmate
Date :
Page : 2

का कृषि पर निर्भर होना है।

(3) परिवार का महत्व—

भारतीय ग्रामीण समुदाय में परिवार सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। इसका तात्पर्य है कि यहाँ व्यक्ति की प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान का निर्धारण उसके परिवार की पृष्ठभूमि में ही होता है।

(4) धर्म का महत्व—

भारतीय ग्रामीण समुदाय में प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वह अपने धार्मिक नियमों, परम्परागत विश्वासों और प्रथाओं के अनुसार व्यवहार करेगा।

(5) जीवन में स्थिरता—

औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के कारण जहाँ दूसरे समुदायों का रूप तेजी से बदल रहा है, वहाँ भारत के ग्रामीण समुदाय में आज भी परम्परागत जीवन-शैली को ही अच्छा समझा जाता है।

(6) श्रम के विशेषीकरण का अभाव—

भारतीय ग्रामीण समुदाय में अधिकांश व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र में प्रशिक्षित नहीं होते हैं। उन्हें अपने जीवन से सम्बन्धित लगभग सभी कार्यों का कुछ ज्ञान अवश्य होता है।

(7) सरल जीवन—

ग्रामीण जीवन की यह एक सामान्य किन्तु आधारभूत विशेषता है। ग्रामीण चाहे कितना भी कठिन परिश्रम क्यों न करें, उन्हें जीवन की अनिवार्य सुविधाएं भी कठिनता से ही मिल पाती है, लेकिन यह ध्यान

रखना आवश्यक है कि सरल जीवन और सरल विचार ग्रामीण समुदाय का पिछड़ापन न होकर उनकी संस्कृति का एक अंग है।

(8) सामाजिक जीवन में समरूपता –

इसका तात्पर्य है कि एक गाँव में भले ही अनेक धर्मों, जातियों और व्यवसाय से सम्बन्धित लोग साथ-साथ रहते हों, लेकिन उनके विचारों, मनोवृतियों, कार्य करने के ढंगों और उत्सवों को मनाने में अधिक भिन्नता देखने को नहीं मिलती।

(9) गतिशीलता की कमी –

साधारणतया गाँवों में व्यक्ति को एक बार जो सामाजिक स्थिति मिल जाती है, उसमें सरलता से कोई परिवर्तन नहीं होता। यहाँ कोई व्यक्ति न तो बार-बार अपना व्यवसाय बदलता है और न ही उसकी मनोवृति में अधिक परिवर्तन होता है।

(10) जाति-व्यवस्था का प्रभाव –

भारतीय ग्रामीण समुदाय में व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहारों को निर्धारण करने में आज भी जाति-प्रथा का प्रभाव सबसे अधिक है। गाँव में जाति पंचायतें आज भी विद्यमान हैं। जो व्यक्ति जाति के नियमों का उल्लंघन करता है उसे इस जाति पंचायतों द्वारा सामाजिक बहिष्कार अथवा प्रायश्चित आदि के रूप में दण्ड दिया जाता है।

(11) जजमानी प्रथा का प्रभाव –

भारतीय ग्रामों में विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्बन्धों का निर्धारण करने में जजमानी प्रथा का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

जन्म, विवाह, मृत्यु तथा अनेक दूसरे उत्सवों और त्यौहारों के अवसरों पर ब्राह्मण, माली, धोबी, नाई, तेली, जुलाहा आदि जातियाँ संयुक्त रूप से जजमान को अपनी सेवाएँ प्रदान करती हैं। वास्तव में भारत जैसे निर्धन ग्रामीण समुदाय के लिए यह प्रथा आज भी उपयोगी प्रतीत होती है।

(12) संयुक्त परिवार - प्रणाली —

भारत के ग्रामीण परिवारों में दो-तीन पीढ़ियों तक के रक्त सम्बन्धी साथ-साथ रहते हैं और परिवार के सभी कार्यों में संयुक्त रूप से हिस्सा बँटाते हैं। परिवार में कर्ता का स्थान सर्वोच्च है और सभी सदस्य उसके आदेशों का पालन करना अनिवार्य समझते हैं। यह संयुक्त परिवार प्रणाली ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

(13) जनमत की प्रधानता —

इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति के व्यवहार गाँव के अन्य लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं से ही प्रभावित होते हैं। एक ग्रामीण व्यक्ति हमेशा इस बारे में सचेत रहता है कि उसके बारे में गाँव के अन्य लोग क्या सोचते हैं और किन-किन कार्यों को करने की आशा रखते हैं। गाँव में व्यक्ति की प्रतिष्ठा का निर्धारण भी जनमत के आधार पर ही होता है।

(14) अशिक्षा और भाग्यवादिता —

खेती की प्रकृति स्वयं इस प्रकार की है कि इसके लिये न तो शिक्षा की आवश्यक

Classmate
Date :
Page : 5.

समझा जाता है और न ही इसके द्वारा शिक्षा दिलाने के लिये व्यक्ति साधन जुटा पाता है। अशिक्षा की दशा में भाग्यवादिता को स्वयं ही प्रोत्साहन मिलने लगता है। यहाँ बच्चों के जन्म, फसल की स्थिति, बिमारियों और आकस्मिक विपत्तियों का कारण व्यक्ति का भाग्य ही समझा जाता है।

ग्रामीण समुदाय की उपर्युक्त विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि यह विशेषताएँ बहुत कुछ सीमा तक अपने परम्परागत रूप को बनाए हुए हैं। इसी के फलस्वरूप भारतीय ग्रामीण समुदाय को एक परम्परागत और स्थिर समुदाय के रूप में परिभाषित कर दिया जाता है।